

मानव संसाधन प्रबन्धन
एवं
संगठन विकास

Human Resource Management
and
Organisation Development

(हिन्दी रूपान्तर : केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग)

राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान,
न्यू महारौली रोड, मुनीरका, नई दिल्ली-110067

National Institute of Health and Family Welfare
New Mehrauli Road, Munirka, New Delhi-110067.



दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से अस्पताल प्रबंधन में स्नातकोत्तर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

खंड 3

मानव संसाधन प्रबन्धन एवं संगठन विकास

इकाई -1

अस्पताल जनशक्ति योजना, भर्ती एवं विकास

इकाई -2

कर्मचारी कल्याण

इकाई -3

मानव व्यवहार

इकाई -4

नेतृत्व, टीम का गठन एवं पर्यवेक्षण

इकाई -5

मतभेदों का समाधान तथा अंतर्व्यक्तिक एवं अन्तरा वैयक्तिक संबंध

अगस्त, 2002

© राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, 2002

सर्वाधिकार सुरक्षित। राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, मुनीरका, नई दिल्ली की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग को अनुलिपि बनाकर (मिमियोग्राफ द्वारा) अथवा किसी अन्य साधन द्वारा किसी भी रूप में उद्धृत नहीं किया जा सकता है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

कोर्स कोर, टीम

पाठयक्रम निदेशक

प्रोफेसर एम.सी.कपिलाश्रमी

पाठयक्रम समन्वयक

डा.जे.के.दास

इकाई लेखक

डा.ए.के.खोखर

कर्मचारी राज्य बीमा अस्पताल, बसाई दारापुर, नई दिल्ली

डा.ए.के.सूद

पूर्व-डीन, रास्वापक संस्थान, नई दिल्ली

डा.एस.पी.खरे

रेलवे मेडिकल सर्विसेज

श्री डी.एच.नाथ

पूर्व संकाय सदस्य, रास्वापक संस्थान, नई दिल्ली

प्रो.ए.जी.चंदोरकर

पूर्व डीन, सोलापुर मेडिकल कॉलेज

डा.रजनी बग्गा

रास्वापक संस्थान, नई दिल्ली

संपादकीय टीम

प्रोफेसर एम.सी.कपिलाश्रमी

निदेशक, रास्वापक संस्थान, नई दिल्ली

डा.जे.के.दास

चिकित्सकीय देखरेख एवं अस्पताल प्रशा. विभाग,
रास्वापक संस्थान, नई दिल्ली

कर्नल (डा.) आर.एन.बसु

सी.ई.ओ एवं मेडिकल निदेशक, हाई मेडिकेयर एवं
अनुसंधान संस्थान, पटना

श्री डी.एच.नाथ

पूर्व संकाय सदस्य, रास्वापक संस्थान, नई दिल्ली

आभार

इस पाठ्यक्रम की कोर टीम स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत विश्व स्वास्थ्य संगठन के दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र कार्यालय नई दिल्ली के प्रति आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने प्रारंभिक अवस्था पर इस परियोजना को कार्यान्वयन करने एवं इसे तैयार करने में सभी प्रकार का सहयोग दिया।

संशोधित माड्यूल तैयार करने में निरंतर सहायता, सहयोग एवं तकनीकी समर्थन के लिए एमसीएचए विभाग, एन.आई.एच.एफ.डब्ल्यू, की अंशकालिक फैकल्टी के डा.आनन्द, टी.आर. के भी आभारी हैं।

डी.एच. पाठ्यक्रम के हमारे स्नातकोत्तर विद्यार्थियों - डा.विनीत गोयल और डा.अनामिका खन्ना ने इस दस्तावेज के संपादन एवं शब्द संसाधन में सराहनीय कार्य किया है।

भूमिका

काफी लंबे अरसे से हमारा यह लक्ष्य रहा है कि प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा के माध्यम से "सभी लोगों" को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएं। स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने में अस्पताल महत्वपूर्ण कड़ी है। यद्यपि चिकित्सा अधिकारी स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली में टीम के नेता और अस्पतालों के प्रबन्धक होते हैं, लेकिन उन्हें इन क्षेत्रों में प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर चिकित्सा पाठ्यक्रम में प्रबन्धकीय कौशलों और नेतृत्व के गुणों के बारे में कोई प्रशिक्षण नहीं दिया जाता है। परिणामस्वरूप, सामान्यतः चिकित्सक में प्रबन्धकीय कौशल विकसित नहीं हो पाता है। प्रायः यह देखने में आता है कि इन विषयों पर सलाह देने के लिए उन्हें निश्चित रूप से सचिवालयों/लिपिकीय कर्मचारियों पर निर्भर रहना पड़ता है। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में इस खाई को पाटने की दिशा में स्नातकोत्तर अस्पताल प्रबंधन प्रमाणपत्र (दूरवर्ती शिक्षा के माध्यम से) पाठ्यक्रम का आरंभ सफल प्रयास है।

उपर्युक्त दृष्टिकोण से, राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान ने आरम्भ में विश्व स्वास्थ्य संगठन से वित्तीय सहायता प्राप्त करके अस्पताल प्रशासन से संबद्ध अथवा इस क्षेत्र में अभिरुचि रखने वाले बहुत से चिकित्सा कार्मिकों को ऐसा प्रशिक्षण सुलभ कराने और उत्कृष्ट अवसर उपलब्ध कराने के लिए दूरवर्ती शिक्षा के माध्यम से अस्पताल प्रबंधन में स्नातकोत्तर प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम तैयार किया है। एक राष्ट्रीय कार्यशाला में विभिन्न सस्थानों के उत्कृष्ट विशेषज्ञों द्वारा प्रशासन में प्रशिक्षण की आवश्यकताओं की पहचान करने के बाद, इस प्रयोजना के विशेषज्ञों द्वारा कार्यक्रम एवं प्रशिक्षण सामग्री/साधन तैयार किए हैं। इसकी सुपाठ्यता सुसंगतता स्पष्टता और जीवन की विभिन्न स्थितियों में उनकी उपयोगिता की दृष्टि से मूल्यांकन करने के लिए शिक्षण सामग्री का पूर्व परीक्षण किया गया। शिक्षण सामग्री को अंतिम रूप दिया गया और प्रमुख विशेषज्ञ समूह ने इन्हें अधिक जन-सुलभ तथा उपयोगी बनाने का प्रयास किया। तत्पश्चात् 2002 में नियम पुस्तक के रूप में शिक्षण सामग्री को विस्तृत रूप से संशोधित किया गया है।

आशा है कि इस पाठ्यक्रम की पाठक-सुलभ सामग्री चिकित्सकों में प्रबन्धकीय क्षमता के विकास के लिए उपयोगी होगी।

प्रोफेसर एम.सी.कपिलाश्रमी
निदेशक,
रास्वापक संस्थान

नई दिल्ली
अगस्त, 2002